

Class - B.A. Part - 1

Sub - Hindi (Hon) Paper - 1

Written by Ravshan Kumar

R. B. G. R. College

① निम्नलिखित पर लिप्यणित लिखें -

(क) संत रविदास

(ख) दादू दयाल

(ग) गुरु नानक

(घ) सुंदर दास

Ans (क) संत रविदास — निर्गुणवादी भक्तकवियों में संत रविदास का नाम कान नहीं जानता है। निम्न वर्ग में उत्पन्न होकर भी उत्तम जीवन शैली उत्कृष्ट साधना-पद्धति तथा उल्लेखनीय आचरण के कारण वे आज भी भारतीय धर्म साधना के इतिहास में सदर स्मरण किये जाते हैं। उनका जन्म काशी में हुआ। काशी को ही उनका निवास-स्थान भी माना गया है। कबीर की भांति उनके जीवनकाल के विषय में भी बड़ा मतभेद है। ऐसा कहा जाता है कि विय वर्तन में वे पुनः साफ करत थे, उसी वर्तन में माँ गाँगा पकड़ लुई थी। तभी से निम्न लोकोक्ति प्रसिद्ध है
 व मन चंगा तो करौत में सांगा ।
 रविदास मुसलः संत के । कबीर की भांति उनका बल भी कल पशु की अपेक्षा प्रतिपाद्य की ओर अधिक था। मूर्तिपूजा, तीर्थयात्र आदि वाट्य विधानों का विरोध कर

उन्होंने आभ्यांतरिक साधना पर बल दिया है। उनकी निम्न पंक्ति या काफ़ी प्रसिद्ध है

॥ प्रभु जी - तुम चंदन हम पानी
जाँक अंग - अंग वासु समामी ॥

(ख) दादू दयाल - दादू पथ के पर्वत
संत दादू दयाल चर्म सुधारक समाज
सुधारके एवं एक रहस्यवादी
कवि थे। मध्यकालीन साधकों में
उनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली
था। उनका जन्म अधमदावाद में
हुआ था। उनके आविर्भावकाल के
संबंध में विद्वानों में मतभेद
है।

दादू प्रतिभाशाली कवि कौ थे।
कहा जाता है कि उन्होंने बीस
सहस्र पदों एवं सा खियों की
रचना की थी किंतु अब उनमें
से बहुत कम उपलब्ध है। उनके
शिष्यों में संत दास एवं जगन्नाथ
दास ने 'हरिवंशी' शीर्षक से
उनकी रचनाओं का संग्रह प्रस्तुत
किया था। 'अंगवधु' भी उनका
प्रसिद्ध काव्य रचना है। संत दादू
कबीर के विचारों से प्रभावित
हैं। निगुण भक्तकवि होने पर भी
उन्होंने ईश्वर के समुण स्वरूप को
मान्यता दी है। इसी प्रकार भक्ति
को भी उन्होंने सहज भाव से अंगी-
कार किया है। किसी मतवाद की
असमझ में वे नहीं पड़े हैं।
उनकी काव्यभाषा ब्रजभाषा है जिसमें
राजस्थानी और खड़ी बोली के शब्दों
का मिश्रण है।

B.A. Part - 1 / Secb - Hindi (Hons) Ques - 1
by Swadesh Kumar

निम्न लिखित पर टिप्पणियाँ -

(ग) गुरु नानक — नानक पंथ के प्रवर्तक गुरु नानक देव एक इतिहास प्रसिद्ध व्यक्ति थे। उनके द्वारा संस्थापित संप्रदाय ने उन्हीं के जीवन-काल में एक व्यापक रूप धारण कर लिया था। राजनीतिक परिस्थितियों के कारण उनका संप्रदाय और शक्ति व्यापक सुदृढ़ और सुव्यवस्थित होना चला गया। नानक पंथ की स्थापना राजनीतिक परिस्थितियों के कारण हुई, किंतु उसका स्वरूप धार्मिक रंगों से अनुसंजित है। नानक देव समन्वयशील और उदार प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। उनमें अकृम्य क्षमा-शीलता, संगठन शक्ति और दूरदर्शिता विद्यमान थी। इनका आविर्भाव भारतीय के निकटस्थ राइमाई की तलवंधी शाम में हुआ था। इनके पिता का नाम कालचंद एवं माता का नाम तृप्ता था। गुरु नानक देव एक समानशील साधु थे। उन्होंने सभी विशासों में यात्रा की थी। इस संदर्भ में सभी धर्मों और मतों के अनुयायी संतों से उनकी भेंट होती रहती थी। फलस्वरूप समाज और धर्म के संबंध में उनकी विचार-धारा अनुभूति और समन्वय पर आधारित है। सत्य के प्रति आस्था के कारण इनकी वाणी में स्पष्टता

एवं उद्बोधन की परवरण है।
 (घ) सुंदर दास — संत दादूदयाल
 के शिष्य सुंदर दास वह ही प्रतिभा-
 संपन्न कवि और साधक थे।
 छह वर्ष की आयु में वे संत
 दादू के शिष्य हुए और अग्रे
 वर्ष की अवस्था में संत जग-
 जीवन और संत राजाव के साथ
 काशी की यात्रा की। वहाँ
 उन्होंने दीर्घकाल तक निवास किया
 और संस्कृत व्याकरण, साहित्य और
 दर्शन की अध्ययन कर समस्त
 विद्याओं में पारंगत हो गये।
 देशात्न उन्हें बहुत प्रिय था।
 अमण करते हुए वे दादू के सिद्धांतों
 को प्रचार करते थे। संत राजाव
 से उनका विशेष स्नेह था।
 सुंदर दास ने ब्यालीस ग्रंथों
 की रचना की, जिनमें ज्ञानसमुद्र
 और अंतरविचार अधिक ज्ञानसमुद्र,
 पुरोहित दहीनारायण शर्मा द्वारा संपा-
 दित 'सुंदरग्रंथावली' (दो भाग) इनकी
 सभी रचनाओं का प्रामाणिक संक-
 लन है। उनकी रचनाओं में भक्ति
 योग-साधना और नीति को प्रधान
 स्थान प्राप्त हुआ है। शृंगार रस
 की रचनाओं के व कट्टर विरोधी
 थे। केशव की 'रसिकप्रिया' की
 'समंजस' और सुंदर कविराय की
 'सुंदरशृंगार' की उन्होंने कठुनी निंदा
 की है। संत सुंदर दास ने कठुनी निंदा
 प्रजभाषा का प्रयोग किया है।